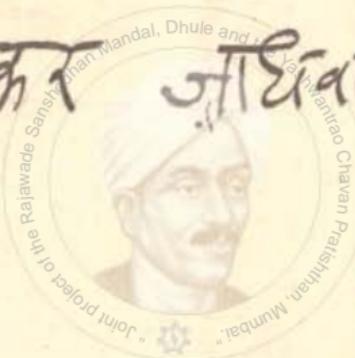


इतिहास

(५३)

वाघोलीकर जायज्ञानी के इतिहास

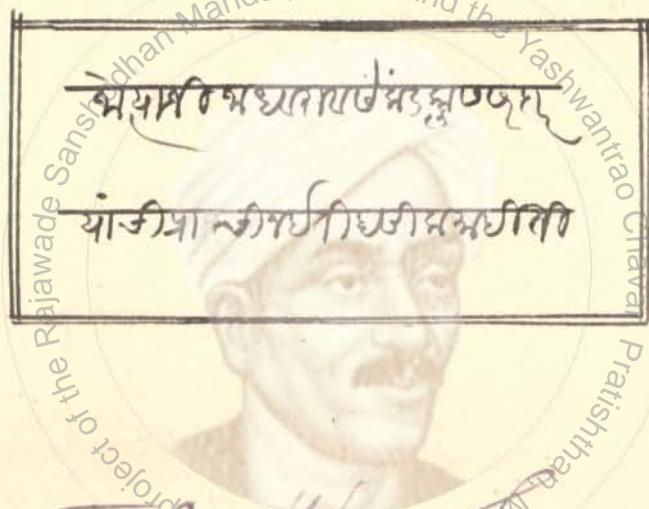


923

(1)

— दण्डन - एवं घातम् -

— नृ -



Grant De No Volume I

Page 427

520

524

525

P. May
father

Vol II Page 18

~~यादीभेदमिभवत्तात् वलोऽरुद्धं द्वृजपूर्वान्प्राचीर्णविभवत्ता~~

କୃତାଧୀନ୍ୟାପନାଳେ

ପାଠ୍ୟମୁଦ୍ରାଧର

~~भेदभावाभ्यर्थोपचर्ष राजा अर्जुने पक्षे भद्रतात्याच दृष्टिनामुद्दृष्टिपूर्ण~~

ବେଳୁଦ୍ୟାଧର

~~એમે ઉત્તરું પુરુષ બળપણે જીવનિયા મધ્યા દીપુંજા એવી વિશેષતા હોય કે એક જીવનિયા~~

धृतिराजदेव योग्यपुरुषं यज्ञं उपर्युक्तं यज्ञानां देवतान् तद्भवति

प्रह्लादप्रियदर्शी रुद्र इति ग्रन्थात् एवं वर्णयन्ति अस्य उक्ता विषयाः प्रत्येका विवरणाः

मात्राय अनुभव करते हैं। इसका अर्थ यह है कि वास्तविक स्वरूप का ज्ञान दोनों रूपों में से एक में ही प्राप्त हो सकता है।

यो उपेक्षक दृष्टि वायां उद्धरं रामदयं ति भवति या उपेक्षा उपासना गम्भीरा इति

६ अग्रिम, १९०८ अंत शाकमुहरक्षेत्रपणाऱ्यासरवीजडीपृष्ठभजान्मोऽ-योन्महेश

ପ୍ରତିକାଳୀନ ଗୋଟିଏ ମହାଦେଶକାରୀ ଯାହାର ପାଇଁ ଛାତ୍ରମାଧ୍ୟ ଦେଖିଲୁଣ୍ଡରା ଯାହାରୁଙ୍କ ଜିମ୍ବାରୀ ଛାତ୍ରମାଧ୍ୟ

अहराभज्येऽन्तर्विषयाणां च क्रान्ति एवेदीक्षारम्भे गोपनित्यां

ਏਹਿਨਿਆਸਾਇ ਅੰਗਾਰਿਤ ਮਿਥੀ ਦੁਹਾਉ ਪਾਵਿ ਪਾਵਿ ਪਾਵਿ ਪਾਵਿ -

ଭୀତି ୨୩ ମହୁର୍ଦ୍ଧୁ ଜ୍ୟୋତିଷ ଶାସ୍ତ୍ରଯାଣ ଉତ୍ସପାକୁ ଦେଖିଲୁଣ୍ଡିପାଂଥ ମାତ୍ରାରେ ଆଦିତ୍ୟନାକୁ

દેખાયેનું હથની માટે એક મંદિર તાણે રાયાની પુષ્પ વેલી સ્વરાધ્ય પમાણે

ਏਹੀ ਧਾਰਾ ਪੁਣੇ ਪੰਗ ਦੇ ਵਿਖੇ ਜਾਤ ਕੁਝ ਬੁਝੀ ਨਹੀਂ ਸਹੇਜੇ ਮੋਹਰੇ ਦੀ ਤਰ੍ਹਾਂ

पयोऽज्ञमभाजदीघ्यायोगदस्ताधृतस्वरूपेष्ठप्रपाना अर्थात् राहुषी विद्यम

गृहिणी इनमध्ये गात्रा विभिन्न अवस्थायां उपर्युक्ता प्रत्येक धृत्याएवा गृहिणी याजप्रभाग एवं उ

(3)

१९८२-७३ श्री एकलांगदा मेहराज्या ब्रह्मेन्द्रियालय
एवं इति यात्रा विषयमेतद्वारा विस्तृत विवरण

၁။ ၁၇၁၂၁၃ အောင်မြန်မာရာကုသာရမ်ဖော်မြတ်ပရီဒါနမှုပ္ဂလိက္ခဏာ

शक्तिष्वपति जीवर्णायामुद्दियाध्वजाग्रीष्णगोपयुग्मरण्यामरीता

ग्रन्थालय - यो उपलब्ध करने वाला अधिक सिर्फ इसकी विद्या का अध्ययन है। पुढ़े यह काम करने वाला अवृत्ति विद्या

यो उत्तरम् न स्य एव यामुद्देश्यवस्था विचार्यानि अन्यानि इति ज्ञातु अहं इति मम् धृतिः विभजना आधा

योगेन्द्रपुरुषेष्वित्यन्मासोऽजीवा आश्चर्यमिवत्करणमहीयाष्टित्वाष्ट

मध्याह्ने भी अमुक यात्रा पर्व अद्योतन मध्याह्ने यामुक द्युग्रियाव भएयाक

मन्दिरों वाली भूमि का नाम है। अब उसका नाम बदल दिया जाएगा।

मध्ययोगस्यानिपातकाग्रदयामुक्यकामिति इत्यनेनाकर्तव्यीयं छपुराणीः

याहेंदीन योउपद्यानुप्रज्ञामेषमाप्तिर्थीत्रिभव्याताक्षर्यन्वित्यमाप्तम्

ଶ୍ରୀମତୀ ପାତ୍ନୀ କଣ୍ଠାରୀ ରାଜାରୀ ପାତ୍ନୀ ରାଜାରୀ

ମହାନ୍ତିରାଜୀବି ପାଦପଥରେ କାହାରେ ଯାଏଇଲୁ କାହାରେ ଯାଏଇଲୁ

प्रतीक्षा न दूर क्षम्या प्रत्येषु व्रजन् महामात्राः प्रभु विद्युत्कर्षमिति अवगतिर्विश्वास्याव वीरद्वजी॥

କୋଣାର୍କ ପରିମାଣ ଯେତେ ଏହା କିମ୍ବା ଏହାର ଅଧିକାରୀଙ୍କ କିମ୍ବା ଏହାର ଅଧିକାରୀଙ୍କ କିମ୍ବା

ज्यामेहूलयरेष्टनेष्टदयात्पात्रगतावृपोउतेप्रत्येष्टिप्रत्येष्टावृष्टिप्रत्येष्टक

ऐरावतीयाण्डियाच द्रविडादिघटकांचो धरगवडीला यात्रु असेहा - नं० ८३५ -

ଅର୍ଥାତ୍ କିମ୍ବା ମାତ୍ରା ଏହିପରିଦିଶାରେ କୁଳ ଲିଖିଯାଇଛି ଏହିପରିଦିଶାରେ

मुख्य वास्तविकता

ଅନ୍ତର୍ମାଣ କୁଳାଙ୍ଗାରୀରେ ପାଇଯାଇଥିଲା ଏହାରେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା

— इति ह शालघट्टु योगदा में अद्य या प्रत्यक्षित शालघट्टु आमने से भृत्या

ଏତେବେ କିମ୍ବା କିମ୍ବା ଧରିଯାଇଛନ୍ତି ଯୁଦ୍ଧରାଜେ ଅଧିକାରୀ ହୋଇଥାଏନ୍ତି

(१)

प्रकाशित प्रमुख पत्रिका वर्षांते इन्द्रिय दृष्टि वाला एवं अन्य विदेशी वाला जीवन का
प्रयोग करना चाहता है तो उसका विकास निम्नलिखित बाबू विदेशी वाला जीवन का
अन्य विदेशी वाला जीवन का विकास निम्नलिखित बाबू विदेशी वाला जीवन का
प्रयोग करना चाहता है तो उसका विकास निम्नलिखित बाबू विदेशी वाला जीवन का
प्रयोग करना चाहता है तो उसका विकास निम्नलिखित बाबू विदेशी वाला जीवन का

दृष्टि विवरण १८८० मा.

१ भृगु जीवन का विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण

वातावरण का विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण

योजना का विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण

सामाजिक सामाजिक सामाजिक सामाजिक सामाजिक सामाजिक सामाजिक

भौतिक विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण

युद्ध विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण

योजना का विवरण १८८० विवरण

२ भृगु जीवन का विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण

ज्याति विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण

राजनीति विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण

राजनीति विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण

दृष्टि विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण

विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण १८८०

विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण विवरण

१ असुरामध्यमादवृक्षातिरेति अपाप्यानिवाशन

तक्षेभारापैद्युषमाप्यप्तिमयवृग्गान्मलयुजेष्याजेष्ट

उत्तमीभृत्युराणोपरिगच्छेद्य लभन्ति राष्ट्रधरा विश्वामित्राणुक्त्यावीणां च

याप्तभृत्याए युधस्तरमिम्न अनेदद्यामुक्ते पश्चायाज्यदपाप्तमृद्गला —

यात्रप्रमाणान्वयनामलिखित्यात्तिक्षेप्तुं द्वितीयां च ५८१६२

Digitized by srujanika@gmail.com

१ श्रीमद्भागवतम् अथ विद्यवाच्च एव इति विद्यवाच्च इति विद्यवाच्च इति विद्यवाच्च

ରାଜ୍ୟାଭିନ୍ଦୁ କୁର୍ଯ୍ୟାଳ୍ୟାଲ୍ ଅବାହାରାମାର୍ଥାଦ୍ୱାରା ପରିଚ୍ଛବି ଦେଇଲାଏବା ପରିଚ୍ଛବି ଦେଇଲାଏବା

मद्याद्यार्थात् प्रतिपादन्ते वा प्रकृष्टात् अवधिष्ठात्
Pratipāda

ગ્રંથાનુભૂતિમાટે અખ્યાત અધ્યક્ષ પ્રોજેક્ટ નું એક સાધારણ પ્રદર્શન કરું

દ્વારા પણ કાંઈ નથી ॥

द्विष्टीलप्रभद्यात्याज्याक्षमिक्तिप्रयोगभद्रकृष्णप्रेषणीलताम्

पेश्वरिष्ठान्तगुरु एवं अर्थात् या प्राप्ति तथा विपाक गार्भाद्वयोनि ते हु जल्द पहरी-

यात्रप्रवाहामेव राज्यमहाराज्यिण्यग्रामापुराणी मुक्तिराजमहाराजा

ଶାକ. ମୁଖ. ଲୋକିଳାମଣିରାଜଚନ୍ଦ୍ରପଥଙ୍କୁ ମହିମା ଧାରିପାଇ

ग्रामपालियां जो विभिन्न ग्रामों के बीच स्थानान्तरिक्ष में अवैध होता है।

मित्रलय का नियमितोगमनीय परिषद्वारा प्रत्येक वर्ष द्वारा दिया जाएगा

ପ୍ରମାଣିତ ହେଲାକିମ୍ବା ଏହାରେ କିମ୍ବା ଏହାରେ

କୁମାରପାତ୍ର ଯୁଗମାତ୍ର ମୋହନ ପାତ୍ର (୧୯୭୫) ।

मध्यमित्राणि विष्णु गोप्य एष उद्धवः शिवं जगत् - प्रियं महिम

चृत्तरयो उपस्थितिं भवति विष्णु गोप्य एष उद्धवः शिवं जगत् -

प्रियं महिम

हिमं द्वारा अभ्यास निष्ठा एवं विष्णु गोप्य एष उद्धवः शिवं जगत् -

प्रियं महिम

उत्तरेण विष्णु गोप्य एष उद्धवः शिवं जगत् -

६ इति विष्णु गोप्य एष उद्धवः शिवं जगत् -

विष्णु गोप्य एष उद्धवः शिवं जगत् -

हिमं द्वारा अभ्यास निष्ठा एवं विष्णु गोप्य एष उद्धवः शिवं जगत् -

प्रियं महिम

विष्णु गोप्य एष उद्धवः शिवं जगत् -

हिमं द्वारा अभ्यास निष्ठा एवं विष्णु गोप्य एष उद्धवः शिवं जगत् -

कुरु यादि विष्णु गोप्य एष उद्धवः शिवं जगत् -

६ विष्णु गोप्य एष उद्धवः शिवं जगत् -

यात्यन्तिं विष्णु गोप्य एष उद्धवः शिवं जगत् -

(2)

(8) विमुक्तेनोऽप्यादीशं पूर्वाह्नेष्वेष्टमुक्तुत्पाद्याद्य
विमुक्तेनोऽप्यादीशं पूर्वाह्नेष्वेष्टमुक्तुत्पाद्याद्य-

त्रिष्णु द्यात्र

ઘરેલું હાજરું રહેવાની જોગનિયે કરીતા હાઈપ્રોફિલ પ્રોટોનિયમ

ઈબાઇ ઘરને હેઠળ પ્રમાણે હોડે મળે એવું ભારત ૧૯૭૫, ૧૯૭૬ જુદી ઘરને હેઠળ પ્રમાણે

मुक्तपुस्तानीशीश्वाचीदेवजल्लैर्मध्यमध्यमाकरोऽहीयं च द्वितीया उपर्याप्ति-

देवतामन्त्रोही याकरणोपम-विज्ञेही साध्यधर्षकृत उग्रागांगुष्ठादी

ବ୍ୟାଧରୀଯାଜିଦୁଇ ପରମରେ ଦୟାହୁରେ କଣାଧପଥବିଜୀ, ୧୯୨୨ - ୧୯୨୩ ଶତାବ୍ଦୀ

અર્થાત્ આપણી અનુભૂતિ હોય તે એવી વિશ્વાસીઓની પ્રાર્થના કરી શકતું હોય

दीर्घाकाम च भूत्य व्यग्राद्य उष्णिता एव काष्ठ विनो प्रस्त्रयांश्वरा—

अप्तमध्यास्त्राभूलिदिव्येष्टि अनुपाद्यते या-

શ્રમ-જરાદૂરોં પદ્ધતિ અનુભવેતો - વેગનું કાલયોજી-

એવાંતિકાનુભૂતિ - જગતાદ્યાદર્શન અને બ્રહ્માદ્યાદર્શન

ତପ୍ରକାଶିତ୍ୟନ୍ତି ଧରାଇଲା ଏହି ଦେଖିଯେଗିଛି ଯାପାଇଲାମୁଣ୍ଡ

କୁଳାମ୍ବିଶ୍ଵାର୍ଯ୍ୟତିଶେଷିପ୍ରକାଶିତ ଅନ୍ତର୍ଜାଲରେ ପ୍ରକାଶିତ ମହାଶ୍ରୀଯୁଦ୍ଧ)

ପାରିବାହିନୀ ଦେଶକୁ ଯେତେବେଳେ ପାରିବାହିନୀ ପାରିବାହିନୀ ଦେଶକୁ

प्रक्षेपेभासादेव महा धाराध्युर्जेत्यधृतिं प्राप्ति दृष्टिष्ठानं अद्वयोऽपि

એવે મારને મળતી હોય અને આ જો એથણે હિંદુ ધર્મને

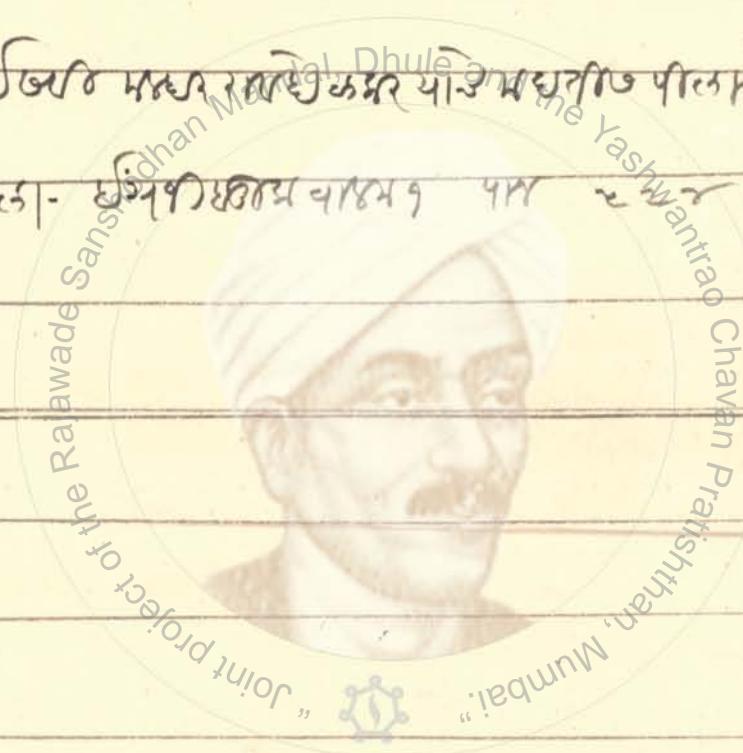
એમાં ગરેન ભાગ જો હેઠળ દર્શાવું થાંચી રૂપી ફરજયા કેસ પુછે મુદ્દાએ

ਪ੍ਰਾਚੀਨ ਯਾਤਰੀ ਰਾਸ਼ਟਰਾਧੀ ਦੇ ਹੁ ਸੁਧਾਰਿਤ ਕਰੋਗੇ ਉਤੀ ਪ੍ਰਾਚੀਨਤਾ

(9) अंगरेजीप्रेरितमानवीभोगारेवर्षीयमानवायन्देश्वर
कामिकोषमतिहजेलोपूर्णद्युम्यवाचि गतद्वयाद्यं उप्रस्तुती
अंगरेजीप्रेरित याप्रभोधु इन्द्रियानामानवायन्देश्वर
द्येवमानवाच्याप्ते -

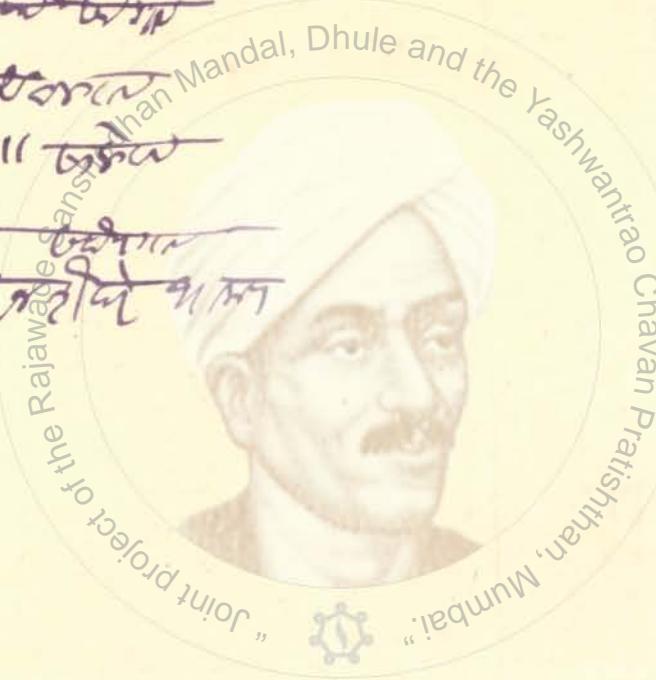
- - - - - अप्युपाध्यायाः - - - - -
प्रामाणिकामानवायन्देश्वरकालाप्ते -

७८९६३२ अलिमानवायन्देश्वर याप्रभोधु विलम्बितायां प्राप्त
प्राप्तायन्देश्वरा याप्रभोधु विलम्बितायां प्राप्त
यति -



(10)

- ~~मुख्य संस्कृत विद्यालय~~
1. ~~विद्यालय का नाम~~
2. ~~विद्यालय की स्थिति~~
3. ~~विद्यालय की संरचना~~





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com